रामभक्ति शाखा की प्रवृत्तियाँ

रामकाव्य धारा का प्रवर्तन वैष्णव संप्रदाय के स्वामी रामानंद से स्वीकार किया जा सकता है । यद्यपि रामकाव्य का आधार संस्कृत साहित्य में उपलब्ध राम-काव्य और नाटक रहें हैं । इस काव्य धारा के अवलोकन से इसकी निम्न विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं :-

राम का स्वरूप : रामानुजाचार्य की शिष्य परम्परा में श्री रामानंद के अनुयायी सभी रामभक्त कवि विष्णु के अवतार दशरथ-पुत्र राम के उपासक हैं । अवतारवाद में विश्वास है । उनके राम परब्रह्म स्वरूप हैं । उनमें शील, शक्ति और सौंदर्य का समन्वय है । सौंदर्य में वे त्रिभुवन को लजावन हारे हैं । शक्ति से वे दुष्टों का दमन और भक्तों की रक्षा करते हैं तथा गुणों से संसार को आचार की शिक्षा देते हैं । वे मर्यादापुरुषोत्तम और लोकरक्षक हैं ।

भक्ति का स्वरूप : इनकी भक्ति में सेवक-सेव्य भाव है । वे दास्य भाव से राम की आराधना करते हैं । वे स्वयं को क्षुद्रातिक्षुद्र तथा भगवान को महान बतलाते हैं । तुलसीदास ने लिखा है : सेवक-सेव्य भाव बिन भव न तरिय उरगारि । राम-काव्य में ज्ञान, कर्म और भक्ति की पृथक-पृथक महत्ता स्पष्ट करते हुए भक्ति को उत्कृष्ट बताया गया है । तुलसी दास ने भक्ति और ज्ञान में अभेद माना है : भगतहिं ज्ञानहिं नहिं कुछ भेदा । यद्यपि वे ज्ञान को कठिन मार्ग तथा भक्ति को सरल और सहज मार्ग स्वीकार करते हैं । इसके अतिरिक्त तुलसी की भक्ति का रूप वैधी रहा है ,वह वेदशास्त्र की मर्यादा के अनुकूल है ।

लोक-मंगल की भावना : रामभक्ति साहित्य में राम के लोक-रक्षक रूप की स्थापना हुई है । तुलसी के राम मर्यादापुरुषोत्तम तथा आदर्शों के संस्थापक हैं । इस काव्य धारा में आदर्श पात्रों की सर्जना हुई है । राम आदर्श पुत्र और आदर्श राजा हैं, सीता आदर्श पत्नी हैं तो भरत और लक्ष्मण आदर्श भाई हैं । कौशल्या आदर्श माता है, हनुमान आदर्श सेवक हैं । इस प्रकार रामचरितमानस में तुलसी ने आदर्श गृहस्थ, आदर्श समाज और आदर्श राज्य की कल्पना की है । आदर्श की प्रतिष्ठा से ही तुलसी लोकनायक कवि बन गए हैं और उनका काव्य लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत है ।

समन्वय भावना : तुलसी का मानस समन्वय की विराट चेष्टा है । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में - उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है । लोक और शास्त्र का समन्वय, गार्हस्थ्य और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृत का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, पांडित्य और अपांडित्य का समन्वय रामचरितमानस में शुरु से आखिर तक समन्वय का काव्य है । हम कह सकते हैं कि तुलसी आदि रामभक्त कवियों ने समाज, भक्ति और साहित्य सभी क्षेत्रों में समन्वयवाद का प्रचार किया है ।
राम भक्त कवियों की भारतीय संस्कृति में पूर्ण आस्था रही । पौराणिकता इनका आधार है और वर्णाश्रम व्यवस्था के पोषक हैं ।
लोकहित के साथ-साथ इनकी भक्ति स्वांत: सुखाय थी ।
सामाजिक तत्व की प्रधानता रही ।

काव्य शैलियाँ : रामकाव्य में काव्य की प्राय: सभी शैलियाँ दृष्टिगोचर होती हैं । तुलसीदास ने अपने युग की प्राय: सभी काव्य-शैलियों को अपनाया है । वीरगाथाकाल की छप्पय पद्धति, विद्यापति और सूर की गीतिपद्धति, गंग आदि भाट कवियों की कवित्त-सवैया पद्धति, जायसी की दोहा पद्धति, सभी का सफलतापूर्वक प्रयोग इनकी रचनाओं में मिलता है । रामायण महानाटक (प्राणचंद चौहान) और हनुमननाटक (हृदयराम) में संवाद पद्धति और केशव की रामचंद्रिका में रीति-पद्धति का अनुसरण है ।

रस : रामकाव्य में नव रसों का प्रयोग है । राम का जीवन इतना विस्तृत व विविध है कि उसमें प्राय: सभी रसों की अभिव्यक्ति सहज ही हो जाती है । तुलसी के मानस एवं केशव की रामचंद्रिका में सभी रस देखे जा सकते हैं । रामभक्ति के रसिक संप्रदाय के काव्य में श्रृंगार रस को प्रमुखता मिली है । मुख्य रस यद्यपि शांत रस ही रहा ।

भाषा : रामकाव्य में मुख्यत: अवधी भाषा प्रयुक्त हुई है । किंतु ब्रजभाषा भी इस काव्य का श्रृंगार बनी है । इन दोनों भाषाओं के प्रवाह में अन्य भाषाओं के भी शब्द आ गए हैं । बुंदेली, भोजपुरी, फारसी तथा अरबी शब्दों के प्रयोग यत्र-तत्र मिलते हैं । रामचरितमानस की अवधी प्रेमकाव्य की अवधी भाषा की अपेक्षा अधिक साहित्यिक है ।

छंद : रामकाव्य की रचना अधिकतर दोहा-चौपाई में हुई है । दोहा चौपाई प्रबंधात्मक काव्यों के लिए उत्कृष्ट छंद हैं । इसके अतिरिक्त कुण्डलिया, छप्पय, कवित्त , सोरठा , तोमर ,त्रिभंगी आदि छंदों का प्रयोग हुआ है ।

अलंकार : रामभक्त कवि विद्वान पंडित हैं । इन्होंने अलंकारों की उपेक्षा नहीं की । तुलसी के काव्य में अलंकारों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग मिलता है । उत्प्रेक्षा, रूपक और उपमा का प्रयोग मानस में अधिक है ।

कृष्णभक्ति काव्य शाखा की प्रवृत्तियाँ

कृष्ण भक्ति काव्य में रस,आनंद, और प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम श्रीकृष्ण या राधाकृष्ण की लीला बनी है । इस काव्य की प्रवृत्तियाँ इस प्रकार से हैं :-
विषय-वस्तु की मौलिकता : हिंदी साहित्य में कृष्ण काव्य की सृष्टि से पूर्व संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य में कृष्ण भक्ति की पर्याप्त रचनाएँ मिलती हैं । यद्यपि इस सारे कृष्णकाव्य का आधारग्रंथ श्रीमद भागवत है, परंतु उसे मात्र भागवत का अनुवाद नहीं कहा जा सकता । कृष्ण चरित्र के वर्णन में इस धारा के कवियों ने मौलिकता का परिचय दिया है । भागवत में कृष्ण के लोकरक्षक रूप पर अधिक बल दिया है, जबकि भक्त कवियों ने उसके लोक रंजक रूप को ही अधिक उभारा है । इसके अतिरिक्त भागवत में राधा का उल्लेख नहीं है, जबकि इस साहित्य में राधा की कल्पना करके प्रणय में अलौकिक भव्यता का संचार हुआ है । विद्यापति और जयदेव का आधार लेते हुए भी इन कवियों के प्रणय-प्रसंग में स्थूलता का सर्वथा अभाव है । अपने युग और परिस्थितियों के अनुसार कई नए प्रसंगों की उद्भावना हुई है ।
ब्रह्म के सगुण रूप का मंडन और निर्गुण रूप का खंडन : कृष्णभक्त कवियों ने ब्रह्म के साकार और सगुण रूप को ही भक्ति का आधार माना है, कृष्ण-काव्य के माध्यम से उन्होंने ब्रह्म के निराकार रूप का खंडन कर सगुण की प्रतिष्ठा की है । सब विधि अगम विचारहिं, तातें सूर सगुन लीला पद गावै ।

भक्ति-भावना : वात्सल्य, सख्य, माधुर्य एवं दास्य भाव की भक्ति का प्राधान्य इस काव्य में मिलता है । वात्सल्य भाव के अंतर्गत कृष्ण की बाल-लीलाओं, चेष्टाओं एवं मां यशोदा के ह्रदय की सुंदर झांकी मिलती है । सख्य भाव के अंतर्गत कृष्ण और ग्वालों की जीवन संबंधी सरस लीलाएँ हैं और माधुर्य भाव के अंतर्गत गोपी-लीला प्रमुख है । इन कवियों ने दास्यभाव के विनय पद भी लिखे हैं ; किंतु अधिकतर सख्य अथवा कांताभाव को ही अपनाया है । कांताभाव में परकीया प्रेम को अधिक महत्व दिया है । इसके अलावा नवधा भक्ति के अंगों का भी वर्णन है ।

वात्सल्य और बाल-मनोविज्ञान का सजीव चित्रण : वात्सल्य रस का अनुपम चित्रण हुआ है । बालकृष्ण की चेष्टाओं का सूक्ष्म और सजीव चित्रण जैसा इन कवियों ने किया है, वैसा अन्यत्र नहीं मिलता । - मैया, कबहुँ बढ़ेगी चोटी । किती बार मोहिं दूध पियत भई अजहूँ है यह छोटी ।

रस-वर्णन : अधिकतर शांत रस का प्रयोग हुआ है। कृष्ण की विस्मयकारी अलौकिक लीलाओं के कारण अद्भूत -रस का भी निरुपण हुआ है । मुख्य रस भक्ति ही ठहरता है जिसमें वत्सल, श्रृंगार और शांत रसों का मिश्रण है । यत्र -तत्र निर्वेद का भी चित्रण विशेषत: सूर और मीरा के काव्य में मिलता है। माधुर्य भाव का चित्रण अद्वितीय रूप से हुआ है ।शृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का अत्यंत मनोहारी वर्णन हुआ है । राधा-कृष्ण के रूप-चित्रण में नख-शिख वर्णन और श्रृंगारिक संबंध - चित्रण में नायक-नायिका भेद के वर्णन का भी विकास हुआ है । वियोग श्रृंगार के लिए भ्रमरगीत प्रसंग अत्यंत महत्वपूर्ण है । संयोग वर्णन : तुम पै कौन दुहावै गैया ? इत चितवन उत धार चलावत, यहै सिखायो मैया ? वियोग वर्णन : कहा परदेशी को पतिआरो? प्रीति बढ़ाय चले मधुबन को, बिछुरि दियो दु:ख भारो ।

संगीतात्मकता : कृष्ण काव्य संगीतात्मक है । संगीत की राग-रागिनियों का प्रयोग प्राय: सभी कवियों ने किया है । आज भी संगीत के क्षेत्र में इन पदों का महत्व अमिट है । सूर , मीरा, हितहरिवंश, हरिदास आदि कवियों के पदों में संगीत की पूर्व छटा है ।

प्रकृति चित्रण : भाव-प्रधान काव्य होने के कारण इसमें प्रकृति चित्रण उद्दीपन रूप में अर्थात पृष्ठभूमि रूप में हुआ है । फिर भी प्रकृति के कोमल और कठोर, मनोरम और भयानक दोनों रूपों का समावेश हुआ है । जहां संसार का सौंदर्य इनकी आंखों से छूट नहीं सका है वहीं मानव ह्रदय के अमूर्त सौंदर्य-चित्रण में कल्पना और भाव अपूर्व वर्णन हुआ है ।

सामाजिक पक्ष : यद्यपि भगवान की लीलाओं का ही चित्रण अधिक हुआ है, लेकिन इसके साथ-साथ लोक-मंगल की भावना भी स्वत: समाविष्ट हो गई । उद्धव-गोपी संवाद में उद्धव को लक्षित करके अलखवादी, स्वाभिमानी, निष्फल कायाकष्ट को ही सर्वश्रेष्ठ साधन मानने वाले योगियों की अच्छी खबर ली है । उपदेशात्मकता का अभाव है । संपूर्ण काव्य सरस और रमणीय है ।

काव्य-रूप : संपूर्ण साहित्य मुक्तक शैली में ही है । अधिकांश रचना गेय पदों में के रूप में हुई है । कुछ कवियों ने सवैया, घनाक्षरी अथवा अन्य छंदों का भी प्रयोग किया है ।

शैली : गेय शैली का प्रयोग हुआ है । गीति-काव्य के सभी तत्त्व यथा भावप्रणता, आत्माभिव्यक्ति, संगीतात्मकता, संक्षिप्तता, भाषा की कोमलता आदि मिलते हैं ।

छंद : गीति-पद, चौपाई, सार और सरसी । दोहा, कवित्त, सवैया, छप्पय, गीतिका, हरिगीतिका आदि छंदों का प्रयोग ।
भाषा : कृष्णभक्ति काव्य में अत्यंत ललित और प्रांजल ब्रजभाषा के दर्शन होते हैं । भाव और भाषा दोनों दृष्टियों से कृष्ण काव्य सम्पन्न है ।

सूरदास

हिन्दी साहित्य में भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक और ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि महात्मा सूरदास हिंदी साहित्य के सूर्य माने जाते हैं। सूरदास का जन्म 1478 ई० में रुनकता क्षेत्र में हुआ। कुछ विद्वानों का मत है कि सूर का जन्म दिल्ली के पास सीही [2] नामक स्थान पर एक निर्धन सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। सूरदास के जन्मांध होने के विषय में मतभेद है। प्रारंभ में सूरदास आगरा के समीप गऊघाट पर रहते थे। वहीं उनकी भेंट श्री वल्लभाचार्य से हुई और वे उनके शिष्य बन गए। वल्लभाचार्य ने उनको पुष्टिमार्ग में दीक्षित कर के कृष्णलीला के पद गाने का आदेश दिया। सूरदास की मृत्यु गोवर्धन के निकट पारसौली ग्राम में 1584 ईस्वी में हुई। सूरदास जी द्वारा लिखित पाँच ग्रन्थ बताए जाते हैं:

(1) सूरसागर - जो सूरदास की प्रसिद्ध रचना है। जिसमें सवा लाख पद संग्रहित थे। किंतु अब सात-आठ हजार पद ही मिलते हैं। (2) सूरसारावली। (3) साहित्य-लहरी - जिसमें उनके कूट पद संकलित हैं। (4) नल-दमयन्ती। (5) ब्याहलो।

सूरदास के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण के अनुग्रह से मनुष्य को सद्गति मिल सकती है। अटल भक्ति कर्मभेद, जातिभेद, ज्ञान, योग से श्रेष्ठ है।

सूर ने वात्सल्य, श्रृंगार और शांत रसों को मुख्य रूप से अपनाया है। जो कोमलकांत पदावली, भावानुकूल शब्द-चयन, सार्थक अलंकार-योजना, धारावाही प्रवाह, संगीतात्मकता एवं सजीवता सूर की भाषा में है, उसे देखकर तो यही कहना पड़ता है कि सूर ने ही सर्व प्रथम ब्रजभाषा को साहित्यिक रूप दिया है।

सूर का काव्य भाव-पक्ष की दृष्टि से ही महान नहीं है, कला-पक्ष की दृष्टि से भी वह उतना ही महत्वपूर्ण है। सूर की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा वाग्वैदिग्धपूर्ण है। अलंकार-योजना की दृष्टि से भी उनका कला-पक्ष सबल है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने सूर की कवित्व-शक्ति के बारे में लिखा है- "सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकार-शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है।"

तुलसीदास

तुलसीदास या गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के आकाश के एक चमकीले नक्षत्र के रूप में हमेशा विराजमान है। तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा के राम भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि है।

तुलसीदास के जन्म तिथि के बारे में विद्वानों में मतभेद है। गोस्वामी जी का जन्म राजापुर में संबंध 1589 के आस-पास हुआ था। 1680 में अस्सी घाट पर श्रावण शुक्ल सप्तमी को उन्होंने अपना पार्थिव शरीर छोड़ा।

गोस्वामी जी को उनके गुरु नरहरि दास ने संरक्षण प्रदान किया। गुरु के साथ ये भी काशी में रहने लगे। यहीं पर उन्होंने शेष सनातन जी से वेद, वेदांग, दर्शन, इतिहास, पुराण आदि की शिक्षा ली।

तुलसीदास में एक कवि, एक राम भक्त, एक समाज सुधारक तीनों एक साथ मान्य है। उनकी प्रसिद्ध कृति 'रामचरितमानस' को उन्होंने 1631 में अयोध्या में लिखना प्रसंभ किया। 'रामचरितमानस' का कथानक रामायण से लिया गया है।

रामचरितमानस लोक ग्रन्थ है और इसे उत्तर भारत में बड़े भक्तिभाव से पढ़ा जाता है। इसके बाद विनय पत्रिका और हनुमान चालीसा उनका एक अन्य महत्त्वपूर्ण काव्य है। महाकाव्य श्रीरामचरितमानस को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय काव्यों में 46वाँ स्थान दिया गया।

गोस्वामी जी का साहित्य विश्व में अपने प्रतिद्वंदी नहीं रखता। उन्होंने शास्त्र- सम्मत भक्ति का लोकजीवन के साथ मेल कर उसे सरल और सुलभ बनाया। उनका काव्य जीवन- काव्य है। यह जीवन के हर मोड़ के साथ मुड़ता गया है।

तुलसीदास का जन्म जिस युग में हुआ उस युग का समाज आदर्शहीन था। तुलसी नहीं दिशाहीन समाज को दिशा दी। उन्होंने कुशल वैद्य के समान सभी बुराइयों का अनुभव कर उन्हें दूर करने का प्रयास किया। आदर्शहीन लोगों के सामने उन्होंने अनुकरणीय आदर्शों को उपस्थित किया। उन्होंने पिता के दशरथ, माता के लिए कौशल्या, पत्नी के लिए सीता, भाई के लिए भारत, सेवक के लिए लक्ष्मण, भक्त के लिए हनुमान और मित्र के लिए सुग्रीव और राजा के लिए राम का आदर्श प्रस्तुत किया। यही नहीं उन्होंने ऊँच- नीच, धनी- गरीब, हिंदू- मुस्लिम सबमें रामत्व की स्थापना की।

तुलसीदास लोकनायक थे। उन्होंने भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोया। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। उन्होंने शैव और वैष्णव के धार्मिक मतभेदों को दूर करने के लिए वैष्णवों की देव राम को शैवों के देव शिव का उपासक बताकर उनकी परस्परिक वेमनस्य का परिहार किया।

गोस्वामी जी का भाव पक्ष इतना पुष्ट है कि कला पक्ष में भी चार चांद लग गया है। इनके काव्य में विविध अलकारों का अन्य अत्यंत कौशल के साथ प्रयोग किया गया है। तुलसीदास ने यो तो सभी रसों का प्रयोग किया है परंतु करुण रस का प्रयोग अत्यंत मार्मिक है।

Teacher's Name- Riya Saha